संत थॉमस स्कूल धुर्वा, राँची

सत्र 2020 - 21

कक्षा - 7 **(विषय- हिंदी)** **पुस्तक- मंथन**

<u>पाठ- 2 अन्याय का विरोध</u>

शब्दार्थ :-

गवर्नेंस - संरक्षिका, दब्बू - कमजोर, तनख्वाह - वेतन, भीरु - कायर
रूबल - रूसी मुद्रा बोदा - मूर्ख, नागा - अवकाश, ज्यादती - अन्याय
क्रूर - निर्दयी, निर्लज्ज - बेशर्मअनर्थ - बेतुकापन अस्तित्व - पहचान

अभ्यास

प्रश्न1 - प्रश्नों के उत्तर दीजिए (मौखिक) :-

क) लेखक ने जूलिया को अपने कमरे में उसकी तनख्वाह का हिसाब करने के लिए बुलाया।
ख) जूलिया ने लेखक को दबे स्वर में यह बताया कि उसकी तनख्वाह चालीस रूबल महीना है ।
ग) लेखक की पत्नी ने जूलिया को कुछ पैसे दिए थे। ये बात लेखक को नहीं बताई।
घ) जूलिया को आजतक अपने काम के बदले कभी भी तनख्वाह नहीं मिली। इस बात को सुनकर लेखक को अचरज नहीं हुआ।

प्रश्न 2- लघूत्तरीय प्रश्न (लिखित):-

क) जूलिया ने अपनी तनख्वाह चालीस रूबल महीना बताई।
ख) जूलिया इतवार को लेखक के पुत्र कोल्या को घुमाने ले गई थी।
ग) लेखक की बेटी तान्या के नए जूते चुरा लिए गए थे।
घ) लेखक की पत्नी ने जूलिया को तीन रूबल दिए।

प्रश्न 3- दीर्घत्तरीय प्रश्न:-

क) लेखक जूलिया की तनख्वाह का हिसाब इसलिए करना चाहता था क्योंकि उन्हें लगा कि वह अपने शर्मीले स्वभाव के कारण स्वयं माँगती नहीं। दो महीने हो गए थे उसे पैसों की जरूरत होगी।इसलिए लेखक जूलिया की तनख्वाह का हिसाब करना चाहता था।
ख) लेखक ने जब कहा कि दो महीने के साठ रूबल तुम्हें तभी मिलेंगे जब महीने के एक दिन भी नागा न हुआ हो, इतवार को और इसके अलावा और तीन दिन तुमने छुट्टियाँ मनाई है। यह सुनकर जूलिया का चेहरा पीला पड़ गया।
ग) जूलिया की तनख्वाह से लेखक ने दस रूबल इसलिए काटे क्योंकि लेखक का पुत्र जूलिया से नजर बचाकर पेड़ पर चढ़ गया था। वहाँ खरोंच लगने से उसकी जैकेट फट गई थी। उसकी भरपाई के लिए लेखक ने जूलिया की तनख्वाह से दस रूबल काटे।
घ) लेखक जुलिया को यह सबक सिखाना चाहता था कि इस निर्दयी संसार में इंसान

भला कहलाए जाने के लिए दब्बू, भोदा, भीरू बन जाए जो अपने ऊपर होने वाले अन्याय का विरोध ना कर पाए। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए निर्लज्ज और कठोर बनना पड़ता है। क्योंकि दब्बू और कमजोर इंसान के लिए इस संसार में कोई जगह नहीं है।